कहानी एक दिए रूपी चौकीदार पर भारी पड़ते भ्रष्टाचारियों के तूफान की

राजकीय महिला महाविद्यालय से प्रिंसिपल ने लाखों की लकड़ी चोरी की

फ़रीदाबाद (म.मो.) सेक्टर 16 ए फ़रीदाबाद के राजकीय महिला महाविद्यालय में लाखों रुपयें की लकड़ी चोरी का मामला प्रकाश में आया है। बताया जाता है कि प्रिंसिपल भगवती राजपूत ने इस कॉलेज में आते ही तूफानी गति से काम करते हुये इस वारदात को अंजाम दिया।

प्राप्त सूचना के अनुसार भगवती राजपूत ने 29 दिसम्बर 2017 को राजकीय महिला महाविद्यालय फ़रीदाबाद के प्रिंसिपल का पद भार ग्रहण किया। उस समय कॉलेज में सर्दियों की छुट्टियां चल रही थी और कॉलेज 6 जनवरी तक के लिये बन्द था। ध्यान रहे कि छुट्टियों में सिर्फ़ कॉलेज के अध्यापकों और छात्राओं की छुट्टी होती हैऔर बाकी सारे कर्मचारी, प्रिंसिपल कॉलेज में आते हैं। कॉलेज में आते ही उनके दफ़्तर में ही डिप्टी-सुपरिटेंडेट चमन प्रकाश ने उनसे बातचीत की और कॉलेज की सफ़ाई के बहाने वहां पड़ी लाखों रुपये की लकड़ी बेच डालने का प्लान समझाया। ध्यान रहे कि यही चमन प्रकाश जी अपनी चोरी और हेराफ़री की हरकतों के लिये पहले भी बदनाम रहे हैं। तय प्लान के अनुसार प्रिंसिपल साहिबा ने 04/01/18 को दो मालियों को अपने दफ़्तर में बुलाया और उन्हें निर्देश दिया कि वे (यानी कि माली और सफ़ाई कर्मचारी आदि) आज थोड़ा देर तक रुकें और कॉलेज में सफ़ाई करवाने में मदद दें क्योंकि कालेज में 'निरीक्षण' के लिये चंडीगढ से टीम आनी है। उधर चमन प्रकाश मंगला, डिप्टी सुपरिटेंडेट, चार-पांच लोगों के साथ, कुल्हाड़ी, आरी रस्से आदि लेकर और दो तीन ट्रेक्टर ट्राली पिक अप आदि लेकर आ गया। इन लोगों ने कॉलेज के बी.बी.ए. ब्लॉक और भड़ाना भवन के आस-पास पड़े बहुत सारे लकड़ी के मोटे तनों को सुविधाजनक साइजों में काटा और अपने साथ लाये वाहनों में लादकर ले गये।

किसी कर्मचारी ने कोई रोक-टोक नहीं की क्योंकि उनको प्रिंसिपल ने पहले ही ताकीद कर दी थी। हां कॉलेज के चौकीदार तेजराम ने जरूर चमन मंगला जी से लिखित आदेश की मांग की जिसे उन्होंने

प्रिंसिपल भगवती राजपूत

डांट कर भगा दिया। इस पर चौकीदार ने अपने मोबाइल से इन वाहनों के फ़ोटो खींच लिये और अपने गेट रजिस्टर में दर्ज कर लिया। उसने अपने इन्चार्ज प्रोफ़ेसर वशिष्ठ को भी फ़ोन किया लेकिन वो अपनी कैंसर पीड़ित बीबी को लेकर दिल्ली गये हुये थे और उन्होंने उस समय कुछ भी करने में असमर्थता जाहिर की। उस दिन कुछ हरे पेड़ भी काटे गये।

पांच फ़रवरी 2018, जो छुट्टी का दिन था, भी यही कहानी दोहराई गई। उस दिन कॉलेज के ट्रांसफ़ार्मर के पास से सीधी बिजली जोड़कर आरे (हैक सा) से लकड़ी काटी गयी। इस तरह बिजली की चोरी भी की गयी। चमन प्रकाश इस दिन भी मौजूद थे और काम पर लगे श्रमिकों को चाय नाश्ता करवा कर गये। इसके भी फ़ोटो तेजराम चौकीदार ने लिये। इस दिन भी कई हरे पेड़ काटे गये और सूखे पड़े लकड़ी के लट्ठे भी काटकर, कॉलेज से बाहर ढोकर ले जाये गये और रेलवे रोड पर अरोड़ा टिम्बर वाले को बेच दिये बताये गये।

6 जनवरी को कॉलेज खुला और प्रिंसिपल ने सुबह ही सुबह आकर गेट के पास ही गाड़ी रोक कर एक माली से पूछा कि मलबा चला गया? इस पर उसने स्पष्ट कहा कि मलबा नही जी लकड़ी गयी है। कॉलेज की लाखों रुपये की लकड़ी बाहर गयी है। इस पर प्रिंसिपल चुपचाप चली गयी और आगे कोई कार्रवाई नहीं की।

उधर कॉलेज के चौकीदार तेजराम ने बार-बार प्रार्थना करने पर भी कोई कार्रवाई न होने पर इस डर से कि कहीं ये पेड़ काटने का और लकड़ी चोरी का अपराध उस पर ना थोप दिया जाये, इस सारे घटनाक्रम की शिकायत आदरणीय खट्टर जी की ''मुख्यमंत्री विन्डो'' पर कर दी। शिकायत तो वो बेचारा पुलिस में भी लेकर गया था लेकिन वहां से उसे धमका कर और वन विभाग में जाने की नसीहत देकर भगा दिया गया। उधर वन विभाग को शायद 'चढावा' पहले ही चढ चुका था इसलिये उन्होंने इसे पुलिस से भी ज्यादा जोर से धमका कर भगा दिया। ध्यान रहे कि यह वही वन विभाग है जिसने इसी कॉलेज की एक बिल्डिंग के बनने के लिये पेड़ काटने की इजाजत देने में महीनों लगा दिये थे वरना रोज जुर्माना लगाने की धमकी। और यहां एक आदमी उनको उसी कॉलेज से पेड़ काटने की सूचना दे रहा है, जो फ़ारेस्ट एक्ट में एक अपराध है, और डी. एफ. ओ. साहब उसे ही धमका रहे हैं।

सूत्रों के अनुसार जनवरी के शुरू में की गई 'सी.एम विंडों' की शिकायत घूमते-फ़िरते फ़रवरी में महाविद्यालय की प्रिंसिपल के पास जवाब देने के लिये पहुंची। उस पर उन्होंने अपने आप को पाक-साफ सिद्ध करने के लिये तुरन्त एक कमेटी बना दी। पांच प्रोफ़ेसरों की इस कमेटी को तीन दिन में अपनी रिपोर्ट देने को कहा गया। लेकिन दीये और तूफान की इस लड़ाई में यहीं एक मोड़ अनपेक्षित आ गया।

कमेटी ने तुर्त-फुर्त प्रिंसिपल की मन माफ़िक रिपोर्ट देने की बजाय मामले की पूरी तहकीकात करनी शुरू कर दी। सभी कर्मचारियों के बयान लिये गये, चमन प्रकाश मंगला से भी गहन पूछताछ की गयी, यहां तक कि प्रिंसिपल से भी पूछताछ की गयी। वाकई ऐसा ही है तो इस कमेटी की सच्चाई के प्रति कटिबद्धता, ईमानदारी और हिम्मत की दाद देनी पड़ेगी। जुल्मतों के इस दौर में तूफान के सामने किसी टिमटिमाते दिये की रोशनी बचाये रखना हिम्मत का काम है। पता चला है कि कमेटी ने मार्च के शुरू में अपनी रिपोर्ट प्रिंसिपल को मय सबूतों और बयानों के सौंप दी जिसे उसने अपनी उल्टी सीधी सफ़ाई लिखकर ऊपर भेज दिया है।

'मज़दूर मोर्चा' की जानकारी के अनुसार कमेटी ने लाखों रुपये की सरकारी लकड़ी की चोरी और 7-8 हरे पेड़ काटने का जिम्मेदार ठहराते हुये चमन प्रकाश, डिप्टी सुपरिटेंडेंट राजकीय महिला महाविद्यालय के खिलाफ़ मुकदमा दर्ज करवाने की सिफ़ारिश की है। कमेटी ने बिजली चोरी के लिये बिजली अधिकारियों और पेड़ काटने के लिये डी.एफ़ ओ फ़रीदाबाद को भी उचित कार्यवाही करने के लिये लिखने को कहा है। यह भी सुनने में आया है कि लकड़ी चोरी के समय कॉलेज के सी.सी. टीवी कैमरे भी बंद कर दिये गये थे। वरना सारे षडयंत्र की विडीयोग्राफ़ी हो जाती। यह उन सभी छात्राओं के अभिभावकों के लिये भी चिन्ता का विषय होना चाहिये जिनके बच्चे यहां पढते हैं कि आखिर अपने स्वार्थ के लिये, अपनी चोरी छुपाने के लिये प्रिंसिपल ने उनके बच्चों की सुरक्षा के साथ खिलवाड़ क्यों किया?

इस पूरे प्रकरण में कई महत्वपूर्ण सवाल उभरकर आते हैं।

1. जब कॉलेज में कोई भी निरीक्षण होना तय नहीं था तो प्रिंसिपल ने मालियों से यह झूठ क्यों बोला?

2. छुट्टी वाले दिन यानी 5 जनवरी 2018 को यह सब कार्यवाही क्यों की गई? क्या उस दिन ड्यूटी पर बुलाये गये दिहाड़ी कर्मचारियों को तय नियमों के अनुसार एक दिन की ज़्यादा तनखा दी गई?

3. सी.सी.टी.वी. कैमरे किसकी इजाजत से और क्यों बन्द किये गये?

4. क्या कमेटी की रिपोर्ट मिलने के बाद प्रिंसिपल ने बिजली विभाग और वन विभाग को लिखकर कोई कार्यवाही करने को कहा?

ऐसा प्रतीत होता है कि प्रिंसिपल ने जान-बूझ कर निरीक्षण का झूठ बोला और इस तरह जल्दबाज़ी और जरूरत का बहाना बनाकर चार तारीख को कार्यालय समय के बाद और पांच तारीख को छुट्टी वाले दिन सोच-समझ कर एक योजना के तहत पेड़ कटवाये ताकि अपनी अनुपस्थिति दिखाकर अपनी संलिप्तता को ढक सकें। इसी वजह से सी.सी. टीवी कैमरे भी बन्द किये गये। जो प्रिंसिपल खुद इस जुर्म में शामिल हो वो किसी अपराधी के खिलाफ़ भला क्या कार्यवाही करेगी?

कुछ कर्मचारियों ने यह भी जानकारी दी है कि चमन प्रकाश ने मन्त्री विपुल गोयल से अपनी बिरादरी के लोगों के साथ मुलाकात की थी और डी.एफ़.ओ. फ़रीदाबाद और शिक्षा विभाग को उसके और प्रिंसिपल के खिलाफ़ कोई भी कार्यवाही न करने का निर्देश दिलवाया है। उधर दोषियों को बचाने के लिये सभी चोर, मंत्री और संत्री प्रयासरत हैं और इधर बेचारे गरीब चौकीदार को रोज वन विभाग, प्रिंसिपल, कई प्रोफ़ेसर और खुद दोषी चमन प्रकाश धमकाता फ़िर रहा है। ध्यान रहे कि चौकीदार तेजराम ठेकेदार के तहत डी सी रेट पर नौकरी पर है। उसको रोज़ नौकरी से निकालने की धमकियां मिल रही है। अब देखना ये है कि प्रिंसिपल भगवती राजपूत के तूफान के आगे चौकीदार तेजराम का दीया जलता रहेगा या बुझ जायेगा। यह कहानी है ईमानदारी के दीये और बेइमानी के तूफान की।

नगर निगम की असल आय 687 करोड़, बढा-चढा कर दिखाई 2293 करोड़ ताकि प्रशासनिक खर्चों की ऐय्याशी चलती रहे

फ़रीदाबाद (म.मो.) विभिन्न प्रकार के करों व लाइसेंस फ़ीस आदि के द्वारा नगर निगम को कुल आय 687.13 करोड़ होने का अनुमान वर्ष 2018-19 के बजट में बताया गया है। यह बजट निगमायुक्त द्वारा 26 मार्च को निगम सदन में पेश किया गया। लेकिन इस आय को बढा-चढा कर 2293 करोड़ बताया गया है। इस बढी हुई राशि में वह सम्भावित आय जोड़ी गई है जो राज्य व केन्द्र सरकार से अनुदान के रूप में मिलेगी। इसके अलावा अपनी जायदादें बेचने व कर्ज आदि मिलने से जो आय होने की सम्भावना है उसे जोड़ा गया है। इस तरह की हेरा-फ़ेरी आज कोई पहली बार नहीं, तीसियों बरस से निगम प्रशासन यही करता आ रहा है। वेतन व प्रशासनिक आदि के जिस खर्च को बजट में 24 प्रतिशत दिखाया गया है वह इसी बढा-चढा कर बनाये गये बजट के हिसाब से है।

निगम की वास्तविक आय के हिसाब से इस मद में खर्ची जाने वाली (320 करोड़) रकम असल आय का लगभग आधा है। और यह समीकरण तो अभी अनुमानित है। वर्ष के अन्त में अनुमानित आय काफ़ी घटी हुई और वेतन आदि पर खर्च बढा हुआ मिलेगा यानी वेतन व प्रशासनिक खर्च असल आय का 60 प्रतिशत का आंकड़ा पार कर जायेगा। किसी भी बजट में घर की जायदादें बेचने व ग्रांटों को नहीं जोड़ा जा सकता। यदि इन्हें ही जोड़ना हो तो फ़िर 2200 करोड़ क्या 4400 करोड़ का बजट बनाने में क्या हर्ज है? इस अवस्था में वेतन आदि का प्रतिशत तो फ़िर 12-14 ही रह जायेगा।

विकास कार्यों पर 1440 करोड़ के करीब खर्च होने का अनुमान जताया गया है। इतनी बड़ी रकम से कौन सा विकास होगा। यहां विकास का एक ही मतलब है, सड़कों की मरम्मत या टूटी सड़कों को दोबारा से बनाना। शहर की एक भी सड़क ऐसी नहीं है जो गत 30 वर्षों में 8 से 10 बार न बनी हो। सीवरेज मेंटेनेंस एवं शोधन के नाम पर भी हज़ारों करोड़ खर्च करने के बावजूद जहां-तहां उफ़नते सीवरों को देखा जा सकता है। इनकी वजह से गली मुहल्लों की सड़कें ब्लॉक होना तो आम बात है ही, पिछले दिनों वाइएमसीए के पास राष्ट्रीय राजमार्ग तक जाम हो कर रह गया था।

जिस खर्च को विकास का नाम दिया गया है उसे यदि मेन्टेनेंस का नाम दिया जाता तो बेहतर होता। इस मेंटेनेंस पर प्रति वर्ष भारी भरकम रकम खर्च करने के बावजूद बारिश की चार बूंदे भी शहर को इस कदर कीचड़ से भर देती हैं कि पैदल चलना दूभर हो जाता है।

दरअसल नगर निगम जनता को अब सुविधा देने के लिये नहीं बल्कि अफ़सरों, नेताओं व ठेकेदारों की लूट का एक बड़ा स्रोत बन कर रह गया है। यदि नगर निगम को चलाने वाले शासक वर्ग की नीयत ठीक हो, उसकी रग-रग में हरामखोरी व रिश्वतखोरी न भरी हो तो निगम की वास्तविक आय 687 करोड़ को ही बढा कर दुगना-तिगुना किया जा सकता है। इसके लिये उन चोरों पर अंकुश लगाना होगा जो टैक्स उगाही में चोरी करते हैं। और इसी आय से जनता को बेहतरीन सेवायें दी जा सकती हैं।

जरूरी है निगम के अनाप-शनाप खर्चों पर अंकुश लगाना। नगर निगम का करोड़ों का ऐसा सामान जगह-जगह पड़ा है जो कभी कहीं इस्तेमाल ही नहीं हुआ। वह केवल कमीशनखोरी के लिये खरीदा गया था। निगम में 100 इन्जीनियरों की ऐसी फ़ौज है जो ठेकेदारों से या अन्य स्रोतों से रिश्वतखोरी के अलावा कुछ नहीं करती। करीब 6 से 10 इन्जीनियर तो केवल तोड़-फ़ोड़ के लिये रखे गये हैं। पहले अवैध निर्माण होने देने के नाम पर रिश्वतखोरी होती है बाद में तोड़-फ़ोड़ के नाम पर।

सही मायनों में इन्जीनियरिंग के लिये शहर को 6 से अधिक इन्जीनियरों की कतई जरूरत नहीं है। सबसे पहले यहां श्रीमान रनोलिया के लिये एसई का पद सृजित किया गया। उसके बाद जब श्रीमान कटारा को चीफ़ इन्जीनियर बनाना था तो एसई के 2 पद सृजित कर दिये गये। मजे की बात तो यह है कि अधिकांश इन्जीनियर फ़र्जी डिग्रियों व डिप्लोमों के सहारे ही यहां मोटी लूट मचाये हुए हैं। जाहिर है इसी तरह की लूट व बर्बादी के लिये निगम अपनी जायदादों को बेच रहा है तथा ग्रांटों को पचा रहा है।

मैं आज शर्मिंदा हूँ,कल गौरवान्वित था

आज शर्मिंदा इसलिए हूँ कि गुजरात के भावनगर जिले के एक गाँव टिम्बी में एक दलित युवक प्रदीप राठौड़ को इसलिए मार डाला गया कि उसे घोड़े पालने का शौक था और घोड़े पर चढ़कर वह गाँव में घूमता था और उच्च जाति के लोगों को यह अपना, अपनी जाति का अपमान लगता था कि दलित युवक सिर पर चढ़ा जा रहा है। घोड़े पर चढ़कर घूमता है। मार डालने की धमकियों के बीच भी पट्ठा डरता नहीं था,लिहाजा उसे मार ही डाला गया।

मैं कल गौरवान्वित इसलिए था कि आसनसोल के मौलाना ने अपने सोलह बरस के बेटे की दंगाइयों द्वारा जान लेने के बावजूद बदला लेने से मुसलमानों को रोका था।

मैं क्या करूँ,मैं वह दलित युवा भी हूँ,जो मारा गया और उन सवर्णों में एक भी ,जिन्होंने उस बच्चे को मार डाला। मैं वह मौलाना बल्कि वह पिता भी हूँ,जिसने अपने बेटे की हत्या का बदला लेने से मुसलमानों को रोका और मैं वह मुसलमान भी,जो एक बाप के इस सब्र को देखकर रो पड़ा और मैं उन दंगाइयों में से भी एक हूँ,जिसने उसके बेटे की जान ली। मैं हिंदू भी हूँ,मुसलमान भी।मैं दोनों मारे जानेवाले बच्चों का पिता भी हूँ और इसके बावजूद सब्र रखनेवाला इनसान भी,जो सबके सामने अपने आँसू छिपाता है और अकेले में फूटफूटकर रोता है। मैं वह दुखियारी माँ और बहन भी हूँ,जिसका खबर में कोई जिक्र नहीं। मैं वह प्रेमिका भी हूँ,जिससे उसने आई लव यू कहा था और मैं चुपचाप आगे बढ़ गई थी।

मैं रोज शर्म से गढ़ता हूँ,रोज कोई न कोई मुझे गौरव से भर देता है। मेरी शर्म पर मेरा यह गौरव जब तक हावी है,तभी तक मैं जिन्दा हूँ वरना मरना कौन मुश्किल है!

-विष्णु नागर

10वी, 12वी का पेपर लीक होने से मोदी सरकार के शिक्षा मंत्री प्रकाश जावेडकर साहब सारी रात नही सोये। बस दारू पार्टी करते रहे।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 1 डी/2बी.पी. नियर हार्डवेयर चौक, एनआईटी फरीदाबाद से प्रकाशित किया। Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06